Indian J. Soc. & Pol. 10 (01) : 143-144: 2023 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
First Published Online 31 JANUARY 2023 **ISSN: 2455-2127 (ONLINE)**

पुस्तक समीक्षा : 'युगपुरुष अटलजी : संपूर्ण जीवनी'/ आनंद कुमार राय) (Atal Bihari Vajpayee: A Man for all Seasons/ Kingshuk Nag का हिंदी अनुवाद), ISBN 978-93-5266-587-7 प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली 2020 पृष्ठ 200 मूल्य 250

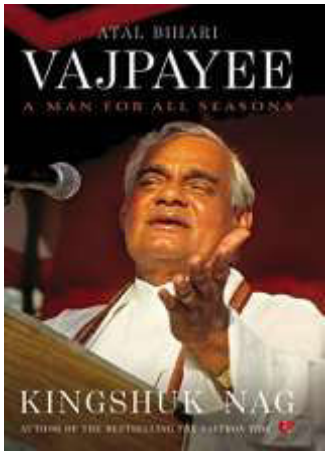

मुनेश कुमार[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, एवं शोधार्थी पीएच–डी.,राजनीति विज्ञान विभाग, शहीद मंगल पांडे राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय मेरठ उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तुत पुस्तक **'युगपुरुष अटलजीः संपूर्ण जीवनी'** किंशुक नाग द्वारा लिखित 'अटल बिहारी वाजपेयीःए मैन फॉर ऑल सीजंस' का हिंदी अनुवाद है। अनुवाद सरल, रोचक, लयबद्ध एवं भावपूर्ण ढंग से किया गया है। यह पुस्तक भारतीय राजनीति के भीष्म पितामह कहे जाने वाले स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीति, राजनीतिक व्यवस्था तथा संवैधानिकतंत्र के कार्यकरण के पांच दशकों के प्रत्यक्षदर्शी राजनेता, अटल बिहारी वाजपेयी की जीवनी है। किंशुक नाग पेशे से पत्रकार रहे हैं तथा दक्षिणपंथी राजनीति के विशिष्ट जानकार हैं। इससे पूर्व भी नाग ने 'सैफरन टाइड' शीर्षक से भारतीय जनता पार्टी के उत्थान की कहानी लिखी थी जो काफी लोकप्रिय रही है। पुस्तक में अटल बिहारी वाजपेयी के वर्ष 1939 में ग्वालियर में आर्य कुमार सभा में भाग लेने से 2004 में उनके जीवन के अंतिम चुनाव और इस दरम्यां उनके आधी सदी के राजनीतिक जीवन, पत्रकार, संसद सदस्य, विदेश मंत्री, एक राजनीतिक दल के संस्थापक अध्यक्ष, नेता प्रतिपक्ष से लेकर तीन बार प्रधानमंत्री, विशुद्ध गैर–कांग्रेसी पृष्ठभूमि से आने वाले तथा पांच वर्ष का कार्यकाल पूरा करने वाले भारत के प्रथम प्रधानमंत्री बनने तक के उनके सफर और अंततः वर्ष 2005 में सक्रिय चुनावी राजनीति से संन्यास तक की उनकी दीर्घकालिक राजनीतिक यात्रा, उनके महत्वपूर्ण भाषणों के चुनिंदा अंशो, प्रमुख निर्णय एवं नीतियों तथा उनके व्यक्तित्व के अन्य महत्वपूर्ण एवं रेखांकनीय पक्षों का समावेश किया गया है। पुस्तक लेखन में किन्हीं गंभीर सैद्धांतिक अवधारणाओं को गढ़ने अथवा उपयोग करने की बजाय रोचक अंदाज में संप्रेषण के पत्रकारी कौशल तथा खोजपूर्ण दृष्टि का बखूबी इस्तेमाल किया गया है। पुस्तक की प्रस्तावना में लेखक ने स्वीकार किया है कि अटल बिहारी वाजपेयी की जीवनी ऐसे इंसान की कहानी है जो आधी सदी तक भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर छाया रहा। ऐसे में उनकी जीवनी लिखना सरल एवं चुनौतीपूर्ण दोनों था। अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व का एक पक्ष जिसे पुस्तक उजागर करती है यह भी है कि चुनावी राजनीति में सक्रिय रहने वाले एक राजनेता से इतर वे चिंतन–मनन, मंथन और विमर्श करने वाले व्यक्ति भी हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि भारत को किस चीज की आवश्यकता है। नाग ने लिखा है कि अटल भले ही बीजेपी के सदस्य थे, जिसे पश्चिमी जगत का प्रेस एक हिंदू पार्टी कहता है लेकिन वह समझते थे कि भारत में किसी भी सरकार को अपनी सफलता के लिए अनिवार्य तौर पर मध्यम मार्ग ही अपनाना होगा। अटल जी अपने दीर्घकालिक राजनीतिक सफर में किसी भी तरह की अतिवादिता से बचते रहे। पुस्तक के प्रथम अध्याय में वाजपेयी के जीवन के प्रारंभिक वर्षों का उल्लेख मिलता है।

दूसरा अध्याय अटल के राजनीति में प्रवेश पर केंद्रित है। कश्मीर की वेदी पर श्यामाप्रसाद मुखर्जी के बलिदान के बाद जनसंघ की राजनीति का दायित्व सीधे अटल पर आ गया। वाजपेयी ने अपने जीवन का पहला चुनाव महज़ 28 वर्ष की आयु में लड़ा। 1957 का चुनाव अटल के राजनीतिक जीवन में गंभीर मायने रखता है क्योंकि एक ही चुनाव में उन्होंने चुनावी राजनीति के तीनों स्वाद– जमानत जब्त होना, हार तथा जीत चखे। अटल जी की वाकपटुता और भाषण शैली ने तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित नेहरु, लोकसभा अध्यक्ष और विपक्ष के अन्य अग्रणी नेताओं का ध्यान आकर्षित किया। नेहरू प्रायः अटल को विदेशी मेहमानों से मिलवाते तथा उन्हें 'भारत के उदीयमान युवा सांसद', 'मेरी आलोचना करने वाले विपक्ष के नेता' और 'भारत के भावी प्रधानमंत्री' आदि नामों से संबोधित करते। लोकसभा अध्यक्ष अनंतशयनम आयंगर ने तो अटल को सदन में हिंदी के सर्वोत्तम वक्ता कहा। विपक्ष का युवा सदस्य होने के बावजूद वाजपेयी को राष्ट्रीय एकता परिषद का सदस्य बनाया गया।

1968 में मुगलसराय रेलवे स्टेशन पर संदिग्ध परिस्थितियों में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की मृत्यु ने न केवल जनसंघ में नेतृत्व का संकट पैदा किया बल्कि अटल के लिए भी संरक्षक की कमी हो गई। इस दौरान बलराज मधोक की आलोचना को भी वे सहजता से सुनते रहे। जनार्दन ठाकुर ने अपनी पुस्तक 'ये नए हुक्मरान' में तो अटल बिहारी वाजपेयी को 'नेहरू का नया अवतार' कहा। स्वतंत्र भारत की राजनीति के दूसरे व्यक्तित्व जिनका अटल पर गहरा असर रहा, जयप्रकाश नारायण थे। वाजपेयी का व्यक्तित्व साहित्यिक मनोदशा के साथ एक राजनेता का व्यक्तित्व है। वह तीखे नुकीले व्यंगों में अपनी बात कहने या प्रतिक्रिया एवं विरोध जताने में माहिर हैं। व्यंग और चुटकियां उनके व्यक्तित्व पर बहुत फबते थे। 1975 में आंतरिक अशांति के नाम पर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 352 का दुरुपयोग करते हुए भारतीय लोकतंत्र पर थोपे गए आपातकाल का

1: Corresponding Author

प्रकोप भी जेल में रहते हुए अटल, आडवाणी, जय प्रकाश नारायण और विपक्ष के अन्य प्रमुख नेताओं ने साथ–साथ झेला था। आपातकाल के समय तथा उसके बाद की राजनीतिक परिस्थितियों मसलन जनता पार्टी का गठन, 1977 के चुनाव, जनता पार्टी की जीत, मोरारजी देसाई का प्रथम गैर–कांग्रेसी प्रधानमंत्री बनना, समकद नेताओं की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का टकराव आदि का संक्षिप्त उल्लेख इस अध्याय का हिस्सा है।

पुस्तक का चौथा अध्याय प्रेम, जीवन और कविता शीर्षक से लिखा गया है। इस अध्याय में राजकुमारी कौल और अटल की दोस्ती तथा उनके संबंधों की गुत्थी को इन दोनों के ही करीबियों द्वारा साझा की गई सूचनाओं एवं बयानों का आधार लेकर सुलझाया गया है। अटल बिहारी वाजपेयी के निर्णयों पर श्रीमती कौल के प्रभाव की तरफ संकेत भी इस अध्याय का हिस्सा है। इसके साथ–साथ अटल बिहारी के परिवार के अन्य सदस्यों की पृष्ठभूमि का भी संक्षिप्त परिचय इस अध्याय में मिलता है। कविकर्म से उनका गहरा जुड़ाव भी उल्लिखित किया गया है। यह अध्याय स्पष्ट करता है कि किस प्रकार प्रेम और कविता हमेशा उनकी छाया बने रहे। पांचवा अध्याय उनके मिलनसार और सर्वप्रिय व्यक्तित्व पर केंद्रित है।यह बताया गया है कि चंद्रशेखर अटल को किस तरह संसद के मंच से भी गुरुजी कहते थे तथा लोहिया उनके हिंदी प्रेम की प्रसंशा करते थे। संसद में अटल ने कई लोगों को अपनी भाषण कला का कायल बनाया, जिसमें विचारपूर्ण बातों के साथ ही अपना एक लहजा भी था। छठा अध्याय जनता पार्टी सरकार में विदेश मंत्री के रूप में अटल के लगभग 2 वर्षों के कार्यकरण, उनकी चीन यात्रा, दोहरी सदस्यता के मुद्दे पर जनता पार्टी का त्याग एवं अप्रैल 1980 में आज के भारत के सबसे बड़े राजनीतिक दल का बीजारोपण, इंदिरा गांधी की हत्या, 1984 में बीजेपी का पहला चुनावी पड़ाव, पार्टी को अतिवाद की राजनीति से बचाने के अटल प्रयासों की कहानी कहता है। अयोध्या में राम मंदिर निर्माण आंदोलन, आडवाणी की रथ यात्रा एवं गिरफ्तारी, बाबरी मस्जिद के विवादित ढांचे को गिराया जाना, अटल जी का दृष्टिकोण तथा अगले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी के सशक्त होते चुनावी प्रदर्शन, राजीव गांधी की हत्या तथा विवादित ढांचे को ढहाने की जांच कर रहे लिब्राहन आयोग की रिपोर्ट में अटल के बारे में कहे निष्कर्षों को भी शामिल किया गया है।

आठवां अध्याय अयोध्या के बाद से अटल के प्रधानमंत्री बनने तथा तीन बार प्रधानमंत्री रहने के लगभग एक दशक से अधिक की उनकी राजनीतिक गतिविधियों की श्रृंखला तथा उसके महत्वपूर्ण पड़ावों को संजोए हुए है। इसमें भारतीय राजनीतिक इतिहास की वह विचित्र घटना भी शामिल है जब 17 अप्रैल 1999 को एक वोट की कमी से उनकी सरकार गिर गई थी। नवम् अध्याय शांति का प्रयास में भारत द्वारा अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व में 11 एवं 13 मई 1998 को किए गए परमाणु परीक्षणों पर भारतीयों एवं परराष्ट्रों की प्रतिक्रियाओं तथा वाजपेयी के कठोर फैसलों, पाकिस्तान से संबंधों को मधुर बनाने के लिए सदा–ए–सरहद नाम से बस यात्रा का आरंभ, लाहौर समझौता और आगरा एकार्ड तथा कश्मीर के मुद्दे को सुलझाने के लिए औपचारिक–अनौपचारिक प्रयासों, इंडियन एयरलाइंस के जहाज आईसी 814 का अपहरण, 13 दिसंबर 2001 को भारतीय संसद पर आतंकवादी हमला, अमेरिका तथा सोवियत संघ के साथ भारत के संबंधों को सुधारने की अटल पहल की कहानी बयां करता है। अगला अध्याय मातृसंस्था अर्थात राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से उनके संबंधों में उतार–चढ़ाव तथा सभी परिस्थितियों में अपने उदार राजनेता, सर्वसमावेशी व्यक्तित्व को सहेजे रखने की उनकी सामर्थ को दर्शाता है। ग्यारहवां अध्याय अटल काल में भारतीय अर्थव्यवस्था में हुए सुधारों की बानगी है वहीं अगला अध्याय भारतीय जनता पार्टी के शाइनिंग इंडिया के नारे के बावजूद उसकी चुनावी हार के कारणों का तथ्याधारित विश्लेषण है। पुस्तक का अंतिम अध्याय अटल बिहारी वाजपेयी को एक उत्कृष्ट राजनेता (ए स्टेट्समैन पार एक्सीलेंस) बताता हुआ समाप्त होता है। वाजपेयी के विपक्ष का सांसद होने के बावजूद भारत का प्रतिनिधित्व करने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग के सम्मेलन में जेनेवा भेजा गया। कांग्रेसी सरकार ने उन्हें पद्मविभूषण से नवाजा। उन्हें उत्कृष्ट सांसद का सम्मान मिला। साल 2015 में उन्हें भारत रत्न दिए जाने पर नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री, अमर्त्य सेन ने कहा कि उनकी शासनकला राजनीति से ऊपर थी। वह नेता (पॉलिटीशियन) से कहीं अधिक राजनेता (स्टेट्समैन) थे। यह अध्याय उनकी सर्वसम्मति, सहमति और सम्मान की राजनीति, कांग्रेस के सशक्त विकल्प के रूप में भारतीय जनता पार्टी को खड़ा करने की उनकी क्षमता, बीजेपी से इतर भी बाकी नेताओं से उनके मधुर रिश्ते, भाजपा को अभिजन नहीं बल्कि जन–जन की पार्टी बनाने के उनके मंतव्य एवं संकल्प तथा संपूर्णता में भारतीय राजनीति में उनकी भूमिका एवं अवदान को चिन्हांकित करता है।

आकार, शब्द–चयन, वाक्य–विन्यास एवं व्याकरण की दृष्टि से पुस्तक गंभीर रूप से सटीक है। एक विराट स्टेट्समैन के संपूर्ण जीवन के सभी महत्वपूर्ण घटनाक्रमों, विचारों एवं भाषणों के उद्धरणों, निर्णयों एवं नीतियों को अपने में समेटती यह पुस्तक राजनीति विज्ञान के विद्यार्थी, शोधार्थियों, आचार्यों, पत्रकारों, प्रबुद्ध नागरिकों, राजनेताओं, नेतृत्व की युवा पीढ़ी तथा भारतीय राजनीति की समझ में रुचि रखने वाले सभी पाठकों के लिए उपयोगी है। पुस्तक जीवनी है इसलिए रोचकता तथा हल्कापन अपेक्षित भी है। लेकिन इसके बावजूद पुस्तक में संदर्भ एवं संदर्भ ग्रंथ सूची का अभाव होना इसकी कमजोरी बनती है। 2015 के बाद के वाजपेयी के जीवन तथा मृत्योपरांत उनके प्रभाव का आकलन पुस्तक में मौजूद नहीं है। यह भी उल्लेखनीय है कि भारतीय संसदीय लोकतंत्र के संपूर्ण कार्यकरण पर अटल के प्रभाव, लोकतांत्रिक परंपराओं के विकास में उनकी उपस्थिति पर एक अध्याय पुस्तक को और अधिक समावेशी बनाएगा।

अटल बिहारी वाजपेयी की अनेक जीवनियों में यह सरल, संक्षिप्त एवं रोचक है। अटल की जीवन–गाथा होने के साथ–साथ यह पुस्तक भारतीय राजनीति की छह दशकों की ऐतिहासिक यात्रा, राजनीतिक व्यवस्था के कार्यकरण में आए उतार–चढ़ावों एवं संवैधानिकतंत्र के संचालन का एक संक्षिप्त दस्तावेजीकरण भी है।